REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2022

सोलंकीकालीन सुणक के ताम्रपत्र की ऐतिहासिकता

Dr. Deshalrajba L. Rathod
Department of History, Arts College Fatepura District Dahod.

उत्तर गुजरात का प्रदेश बहोत ही प्राचीन और ऐतिहासिक है। इसीलिए इस विस्तार में से इतिहास लिखने के लिए बहोत से विश्वसनीय दस्तावेजी पुरावे हासिल होते है। उत्तर गुजरात में आया हुआ पाटण सोलंकीवंश के शासनकाल में राजधानी रहा है। इसीलिए इस राजवंश को मिलेजुले बहोत से दस्तावेज, स्थापत्य, साहित्य आदि इस विस्तारमें से प्राप्त हुए वह सामाजिक है। सोलंकी वंश के शासनकाल में उत्तर गुजरात में बहोत शिल्प, स्थापत्य, मंदिर, किल्ले और जलाशय बंधे गए है और उसके निभाव के लिए जमीन के दान दिए गए इसीलिए ऐसे दान दिए गए अनेक ताम्रपत्र इस विस्तार में से प्राप्त हुए है। ऐसा ही एक विक्रम संवत ११४८ वैशाख सुद १५ सोमवार का सोलंकी राजा कर्णदेव प्रथम का सुणक गाम में से प्राप्त हुए ताम्रपत्र। इस ताम्रपत्र की छाप मी.एच.कसेन्से अभिलेख विद्या के निष्णात आचार्य गिरजाशंकर वल्लभजी को भेज दी थी और उसका अनुवाद पहलीबार आचार्य गिरजाशंकर के द्वारा किया गया है।

❖ दाशासन का स्वरुप :

यह ताम्रपत्र का श्लोक संस्कृत गद्य में है। यह दानशासन दो तांबे के पतरे में आया हुआ है। ताम्रपत्र के एक भाग पर १२ पंक्ति और दूसरे पतरे पर ११ पंक्तियाँ अंकित हुई है। पढ़ाइ के वक्त वह ताम्रपत्र सुरक्षित था और उसका पढ़ना स्पष्ट था। सिर्फ उस दोनो पतरो को जोडने वाली कडीयां टूट गई थी। क्लीट द्वारा वह ताम्रपत्र की विक्रम संवत की तीथि पर से अंग्रेजी साल की गीनती की गई तो वह ई.स.१०९१ के माह महिने की पाँचवी तारीख और सोमवार था और उस दिन भारत में चंद्रग्रहण दिखाई दिया था। भारत में ग्रहण के दिन दान का महिमा प्राचीन समय से ही था वह यहाँ स्पष्ट होता है।

❖ ताम्रपत्र में आए हुए गाँव और उनकी ऐतिहासिकता :

यह ताम्रपत्र की जाहेरात सोलंकीवंश के पाटनगर अणहिलपाटक यानि की हाल ही के पाटण में हुआ था। ताम्रपत्र में आनंदपुर पथक विषय के १२६ गाम का संबोधन करके दान की घोषणा की गई है। यह आनंदपुर यानि की हाल ही का वडनगर।

यह वडनगर गाम सोलंकी वंश के शासनकाल में महत्व का नगर था इस बात की पुष्टि करते अनेक स्थापत्य आज वडनगर में हयात है। इस आनंदपुर एकम में आए सुणक गाम में पानी के लिए रसोवी (जलाशय गाँव के लिए सरोवी और सुनक के लिए सुनक शब्दप्रयोग हुआ है) के निभाव के लिए दान दिया गया है। यह गाँव हाल महेसाणा जिले के ऊंझा तालुका में आया है। यह गाँव पाटण से २३ कि.मी. और वडनगर से ४२ कि.मी. के अंतर पर आया है। यानि की पाटण और वडनगर के मार्ग में आया यह गाँव उस वक्त महत्व था। क्युंकि आज भी इस नगर में सोलंकी काल का भव्य निलकंठ महादेव मंदिर और शिल्प आये है। जमीन जो दान दी गई वह जमीन लघु (छोटी) डाभी गाम के सीम में आती थी। यह गाँव हाल सुणक से २५ कि.मी. के अंतर पे आया है। आज भी यह गाँव डाभी के नाम से जाना जाता है। दी गई जमीन के वायव्य कोण में संडेर गाम आया है। आज यह गाम डाभी गाम से ७ कि.मी. के अंतर पे आया है। ताम्रपत्र में दर्शाया गया पाटण, आनंदपुर, सुणक, संडेर, डाभी जैसे गाँव सोलंकी युग के साक्षा ी आज भी यह गाँव उसके मूल नाम से पहचाना जाता है। सोलंकवंश के शासक अपने आधिपत्य के नीचे छोटे गाँवो में भी प्रजा कल्याण के काम का ध्यान रखा जाता था उसका यह ताम्रपत्र निर्देश करता है।

ताम्रपत्र में दीए गये दान के तौर पर कर्णदेव का उल्लेख किया गया है और ताम्रपत्र की तीथि परसे जाना जाता है कि वह कर्णदेव पहला था। कर्णदेव पहला का शासन ई.स.१०६४ से १०९४ रहा था। इस ताम्रपत्र में कर्णदेव का एक बिरुद त्रिलौक्यमल्ल दर्शाया है। इस ताम्रपत्र का दान कर्णदेवने अपने आधिपत्य के नीचे विषय पथक (आंनदपुर) के १२६ गाम के समस्त राजपुरुषो और ब्राह्मणादिन संबोध कर जाहेर किया था। ताम्रपत्र में अणीहल्लपाटक और आनंदपुर नगर आगे 'श्रीमद्' शब्दप्रयोग हुआ है जो उसका महत्व दर्शाता है। इस ताम्रपत्र में उल्लेखित दान जगत के स्वामी भवानी के पति शिव की पूजा करके दीया। जो सोलंकीवंश के शासनकाल में शैवधर्म का महत्व दर्शाता है और सोलंकीवंश के शासक शैवधर्मी थे उसका ख्याल इस ताम्रपत्र पर से आता है। यह दान अपने माता-पिता और कर्णदेवने अपने पुण्यार्थे दिया हुआ दानशासन में नोंधा गया है। आगे की पंक्ति में दान किसको दिया इस बारे में लिखकर नोंधा गया है कि सुणक गाम में ठक्कुर महादेव के द्वारा पानी का जलाशय बांधा हुआ इसके निभाव के लिए लघु (छोटी) डाभी गाम में उसके कुटुंबी जसपाल (यशपाल), लाला, बकुलस्वामी के मालिकी और उसके नामधारी १२ पाइला ४ हल की चतुष्टयभूमि दान दिया है। इस जमीन के चोक्कस जग्या निर्धारण के लिए आगे नोंधा गया है कि इस भूमि के पूर्वे भट्टारिका, रुद्र, नेहा और लाला द्विजो के क्षेत्र है। दक्षिण में महिषराम का क्षेत्र है। पश्चिम और उत्तर में संडेर गाम की सीमा है। उसी जमीन के सभी भाग, उपभोग, सुवर्ण आदि की सत्ता जलाशय के निभाव के लिए जैसे आज तक ली थी उसी तरह चालु रहेगा। आगे दानपत्र के भगवान व्यासके किया है यह करके संस्कृत श्लोक नोंधा है। "भूमि दिए गए स्वर्ग में साइठ हजार साल बसे है। वह हरि लेनार और उसके हरण में अनुमति दिए गए उतना ही समय नर्क में बसे है।"

❖ दानशासन की ऐतिहासिकता :

ताम्रपत्र में वहीवट की द्रष्टि से बहोत ही महत्व की ऐतिहासिक माहिती प्राप्त हुई है। इस समय वडनगर (आनंदपुर) १२६ गाम का मुख्य मथक था वह इस ताम्रपत्र पर से स्पष्ट होता है। कर्णदेव पहला के शासनकाल के अधिकारीयों और उनके पद की जानकारी भी प्राप्त हुई है। जैसे कि महाक्षपटलीक के अक्षपटलीक दानशासन का लिखाण करनार अधिकारी थे। ज्यादातर इस पद पर कायस्थ की निमणूंक होती थी। इस ताम्रपत्र का अक्षपटलीक केक्कक था जो वटेश्वर का पुत्र था। वटेश्वर भीमदेव पहला के वि.सं.१०६३ के दानपत्र को महाक्षपटलीक था जो कायस्थ कांचन का पुत्र था यानि की इस पर से जाना जाता है कि बहोतबार यह पद वंशपरंपरागत रहता। कायस्थ ज्यादातर महाक्षपटलीक यानि की दफ्तर और लेखन की कामगीरी संभालनार

अधिकारी था। उपरांत दूसरे एक पद का उल्लेख आया है वह है महासंधीविग्रहक। बहोतबार महासंधीविग्रहक और दूत्तक का पद एक ही व्यक्ति संभालता था। इस दानशासन का संधीविग्रहक तरीके चाहील का उल्लेख प्राप्त होता है। इस दानपत्र के आधार से अपनो को उस समय की जमीन की मापणी की पद्धति भी जान शकते है। ताम्रपत्र में ४ हलवाह और १२ पाइला जमीन के दान का उल्लेख है। उस समय जमीन की मापणी एक हल से, दो हल से इस तरह खेडा जाता उस तरह होती हलवाह का माप नीचे मुजब गीना जाता।

१ हलवाह = ३३६० हस्त

= ८०६४० अंगुल

= ४८३८४० जव

१ हलवाह = १ वांस

१४ वांस = १ नेतन

२० नेतन = १ हलवाह

इस ताम्रपत्र पर से सोलंकीवंश के शासनकाल की बहोत ऐतिहासिक माहिती उजागर होती है। यह ताम्रपत्र के द्वारा कर्णदेव पहला के बिरुद, उस समय के उनके आधिपत्य का विस्तार, उसमें वडनगर का मुख्य मथक तरीके उल्लेख उपरांत उस समय के वहीवटी अधिकारीयों, उनके होद्दे आदि की माहिती प्राप्त हुई है। उपरांत उस समय जमनी की मापणी के लिए उपयोग में आती पद्धति का भी ख्याल आता है। एक ताम्रपत्र उस समय की बहोत सी माहिती देता है।

संदर्भ सूचि :

१. इश्वरलाल ओझा पुरावृत्त स्वयम प्रकाशित पहली आवृत्ति, विसनगर, २००६, पृ.१९ से २१, ४ से ६, गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास, भो.जे.विद्याभवन

२. Acharya Girjashankar, Vallabhaji, Historical Inscriptions of Gujarat, Part-2, The Ferbs Gujarati Sabha, Bombay, 1935

३. ग्रन्थ, सोलंकीकाल, गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास (संपा.) परीख रसिकलाल छो., २००५, अमदावाद, तृतिय आवृत्ति, विद्याभवन, जे.भो. ४

४. शास्त्री हरिप्रसाद गुजरात का प्राचीन इतिहास१-, अहमदाबाद, ९६४